राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद,
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

सहज
(अवधी भाषा)

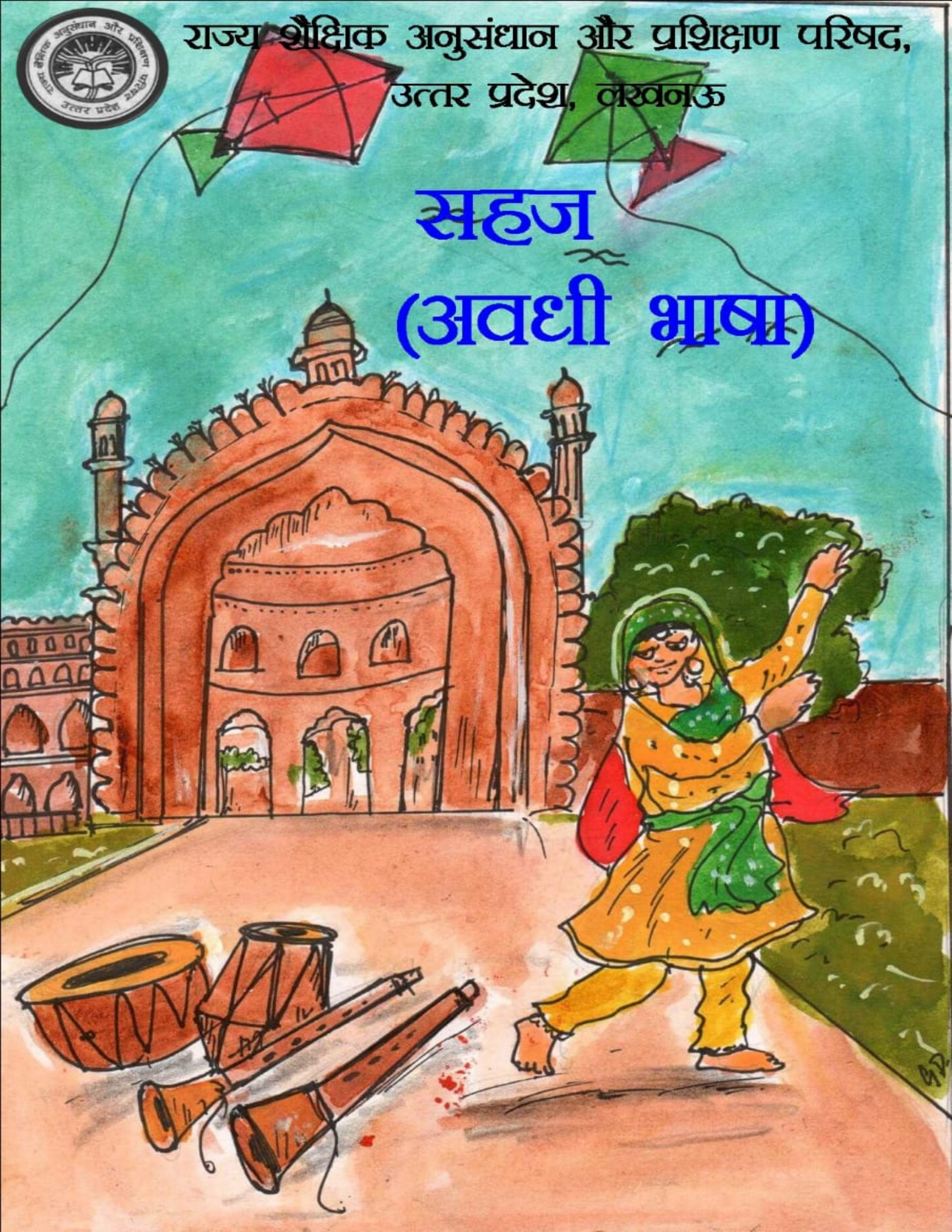

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद,
उत्तर प्रदेश, लखनऊ

सहज
(अवधी भाषा)

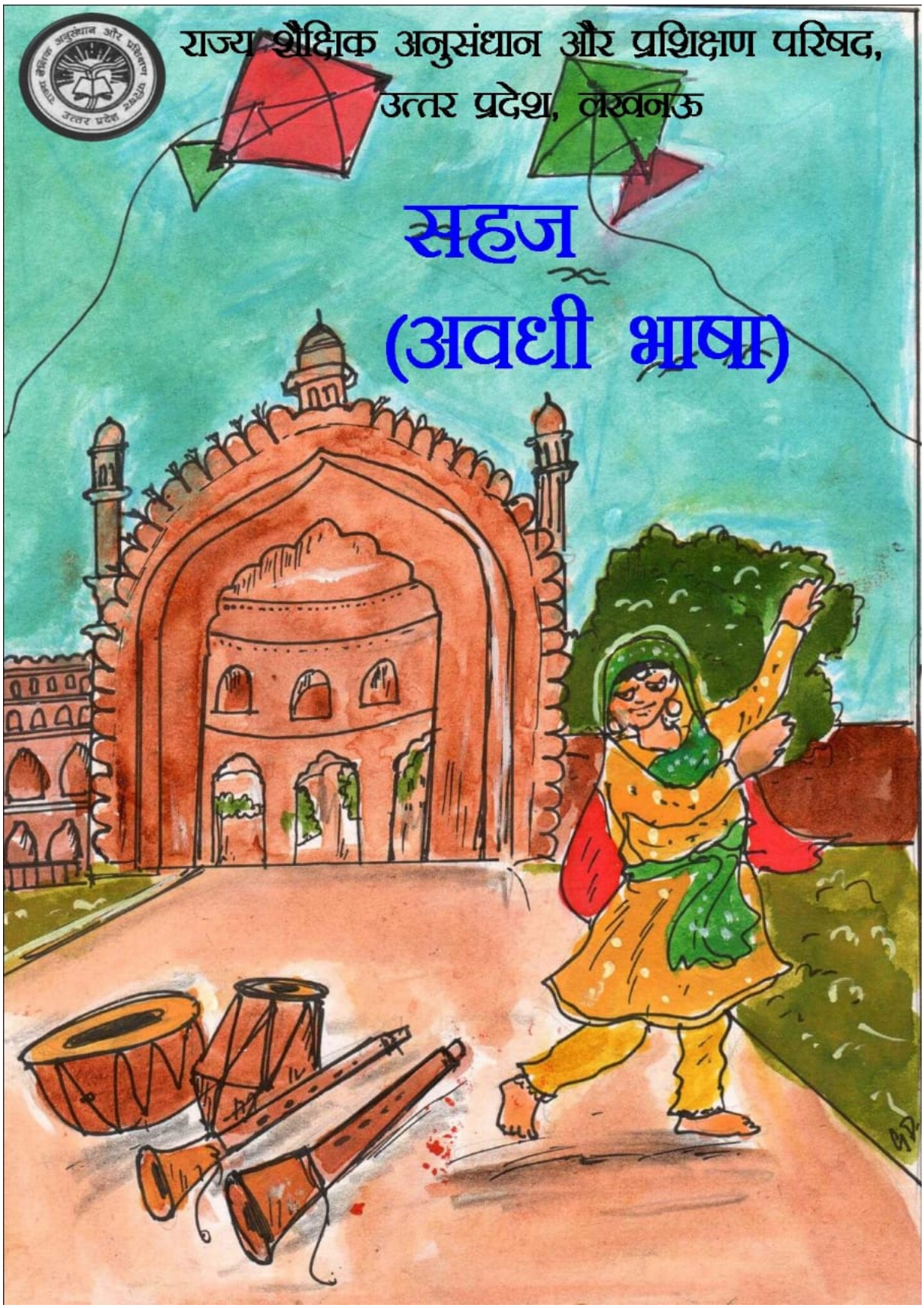

जे केऊ सूरज चाँद बनाइन

जे केऊ सूरज चाँद बनाईन

जे केऊ नखतन का चमकाईन

जे केऊ नखतन का चमकाईन

जे केऊ फूलन का गमकायिन

जे केऊ चिरई का चहकाईन

जे सगरी दुनिया का बनाईन

उइ भगवन कय हम गुन गाई

उनके चरनन सीस नवाई

पास पड़ोस

FKBSC8

ई चित्र मा तुम का देख रहे हौ ,देखौ औ बताऊ ,तुम्हरे गाँव मा और का चीज है जौन ई गाँव मा नहीं है

अभ्यास

- झोंपड़ी के उप्पर को बैठ है ?
- औरत का कर रही है ?
- केतने बच्चा पाठशाला जाय रहे हैं ?
- बिरवा के नीचे केतने जने हैं ?
- गैया का करत है ?
- बछवा का करत है ?
- तुम्हरे गाँव कै का नाम है ?

बया हमार चिरइया रानी

बया हमारि चिरैया रानी
घास फूस लै महल बनावै
उंच डार पे ऊ लटकावै
खेत पात से दाना लावै
नदी नार से पानी लावै
तुमका दूरि जाय ना देबै
दाना से अंगना भरि देबै
हौदा मा पानिव भरि देबै
मीठ मीठ औ ठंडा पानी
बया हमारि चिरैया रानी
बया हमारि चिरैया रानी

अभ्यास

- तुम कौन कौन चिरई देखे हौ ?
- बया आपन घोसला कैसे बनावत है ?

- बया आपन घर कौन चीजन से बनावत है ?
- कौन चिरई पाली जाती हैं ?
- बया कम हुइ रही हैं ?इनका बचावै की खत्तिर तुम का कर सकत हौ ?
- ऊ चिरई औ हरहा कै नाम बताऊ जून कम परि रहे हैं ?
- अगर चिरई की तिना तुम्हरे पखना होती तौ तुम का करतिउ?

टपका कै डर

बरखा कै दिन रहा , चारिव कईती पानी बरसत रहा ,दादी अम्मा कै घर भीगत रहा ,थोरी देर मा छपरा से पानी टपकै लाग , दादी अम्मा परेशान हुइ गयीं ,मुला करबै का करतीं बेचारी ? छपरा पुरान रहा ,पानी तौ टपकबै करतै .थोरी देर मा पाथर गिरय लाग, बैरी के बराबर पाथर ,वैसी एक बाघ पाथर की मार से हल्ल ,कूदत फांदत दादी अम्मा के घर के नंगीचे पहुँचा.दादी अम्मा अन्दर भात बनावत रहीं ,चूल्हा पै पानी टपकत रहा टप- टप- टप- टप.दादी झुंझुलाय गयीं ,औ बोली कि हमका जेतना टपकवा से डर लागत है ओतना तौ बाघौ से नहीं लागत .बघौना सोंचिस या बुढ़िया तौ हमहू से नहीं डेरात मुला टपका से डेरात है, ईका मतलब है कि टपका हमहूँ से बड़ा कोनौ जानवर आय , बस , एतना सोंच कै बघौना डेराय गवा औ मूड़े पै पांव धरि कै भाग गवा .

बरसात -बरखा **चारों** -चारिव

तरफ -कैती **छप्पर** -छपरा

ओला-पाथर **बेर** -बैरी

परेशान -हल्ल **पास** -नंगीचे

चावल -भात **जितना** -जेतना

सोंचा -सोंचिस **इसका** -ईका

बाघ -बघौना **सिर** -मूड़

अभ्यास

- दादी काहे हल्ल रहीं ?
- बघौना दादे के घर के लगे काहे गवा रहै ?
- बघौना काहे भाग ?
- छपरा काहे से बनत है ?
- ओला परत हैं तौ तुम का करत हौ ?
- अच्छा बताऊ कि बरखा मा का का भीगत रहा होई ?

ममता कै घर

हमार नाम ममता है .हमार घर मानवाला गाँव मा है ,हमरे घर की देवारैं माटी की बनी हैं.देवारन पै फूस कै छपरा धरा है .घर के चारव कैती दल्लान है .पाछे बाड़ा मा गौसाला बनी है ,हुआं आम के बिरवा पै झुलवा परा है ,झूलवा पै हम औ हमार भाई मगन झूलित है ,

मगन औ हम ,रोज पछिलहरा उठिकै दतून करित है ,फिर नहाय कै नास्ता करित है ,नास्ता करय के बाद तैयार होइत है ,ईके बाद इस्कूल जाइत है .इस्कूल से आवै के बाद हमरे भूख लाग जात है ,,अम्मा कहत हैं ,",ममता ,मगन ! पहिले आपन बस्ता खूँटी पै टांगि आऊ ,हाथ मुंह धोय लेव ,फिर खाना खाय लेव ."
जौने दिन अम्मा का अस्पताल मा जादा काम रहत है उइ दिन खाना बप्पा बनावत हैं ,हम पंचे दुपहरे मा रोज दाल,भात ,हरी सब्जी औ रोटी खाइत है . हम बगिया से टमाटर ,मूरी,गाजर लै आयित है ,जिनका हम धोय कै खाईत है .मगन का लौकी की सब्जी बड़ी नीक लागत है बप्पा खेते पै काम करत हैं .संझा खेते से लौट कै बप्पा बैलन का खूंटा से बांधत हैं औ हरेरी खवावत हैं .
अम्मा गैया कै दूध दुहत हैं .
बत्ती चली जात है तौ मगन ढेबरी जलाय देत है ,घर मा उजेर हुइ जात है ,मगन औ हम साथे साथे बैठ कै पढ़ित है ,
रात का खाना खाय के बाद दादी हमका कहानी सुनावत हैं .
कहानी सुनत सुनत हम सब जने सोय जाईत है

दीवारें -देवारय **छप्पर** -छपरा
तरफ -कैती **वहां** -हुआं
पेड़ -बिरवा **झूला** -झुलवा
पड़ा -परा **सबेरे** -पछिलाहरा
दातून -दतून **स्कूल** -इस्कूल
हम लोग -हम पंचे **मूली** -मूरी
चावल -भात **अच्छी** -नीक
शाम -संझा **चारा** -हरेरी
लैंप -ढेबरी **उजाला** -उजेर

अभ्यास

- तुम्हरे गाँव कै का नाम है ?
- तुम्हरे स्कूल कै का नाम है ?
- तुम आपन दांत काहे से साफ़ करत हौ ?
- तुम सबेरे नास्ता मा का खात हौ ?
- मगन औ ममता स्कूल जाय से पहिले का करत हैं ?

- तुम्हरे घर की दीवारैं काहे से बनी हैं ?
- तुम अपने घर के कौन कामन मा हाथ बटावत हौ ?

मेला

श्यामा शिवपुर कै म्याला देखै जाय रही है ,ऊ नई फिराक पहिरे है

श्यामा –अम्मा अम्मा जल्दी चलव नाही तौ अब्दुल चाचा की ट्राली मा जगह न मिली

अम्मा – तुम खाना तौ खाय लेव

श्यामा –हमका भूख नहीं लाग है ,बप्पा बिन्नहक देर लगाय रहे हैं उइ तौ अबहीं तक नये कपड़व नहीं पहिरिन हैं

बप्पा- तुम पंचे चलि कै चाचा की ट्राली मा बैठव ,हम भैंसी का हरेरी दै कै आय रहे हन

ट्राली मा बहुत जने बैठ रहें . श्यामा ,ऊकी अम्मा औ बप्पा ट्राली मा बैठ गे . ट्राली चलि परी . तब्बै एक हवाई जहाज सों सों करत निकरा सब गेदहरा चिल्लाय परे, हवाई जहाज ,हवाई जहाज .

थोरी देर मा म्याला नंगीचे आय गवा . मीनू के बप्पा गेदहरन का समझावे लागे म्याला मा सब जने एक दुसरे कै अंगुरी पकरे रहेव, नहीं तौ हेराय जैहौ . मेला मा मेर मेर कै दुकानें रहीं.खेलौनन कै दूकान देखि कै गेदहरा रूकि गे.मीनू की अम्मा बोलीं पहिले म्याला घूमि लेव फिर खेलौना खरीद देबै , सब लोग मिठाई की दूकान पै गये हुआँ उइ सब जलेबी औ बरफी खायिन .

म्याला मा सरकस लाग रहा ,गेदहरा सरकस देखिन औ झुलवा झूलिन .एक कैती जादूगर जादू देखावत रहा .श्यामा चाभी वाला जहाज खरीदिस ,मीनू गाड़ी औ अम्बर जोकर खरीदिन .श्यामा की अम्मा बक्सा खरीदिन .बप्पा बैलन की खत्तिर घंटी खरीदिन .म्याला देखय के बाद सब लोग ट्राली से घर का वापस चलि दिहिन .नेहा कहिस- रोज म्याला देखय का मिलय तौ केतना नीक लागत .अम्बर बोला रोजय मिठाई ,समोसा अहा

मेला –म्याला **अंगुली** –अंगुरी
फ्राक –फिराक **तरह तरह** –मेर मेर
पिता जी -बप्पा **झूला** –झुलवा
चारा –हरेरी **रोज** –रोजय
निकला –निकरा **सर्कस** –सरकस

अभ्यास

- तुम कौन कौन मेला गये हौ ?हुआ पै तुम का का देखेव ?
- का तुम्हरे गाँव मा कोनौ मेला लागत है ?
- तुम जौने मेला गयेव रहै उमा काहे काहे की दूकान लगी रहीं ?
- अगर तुमका दूकान लगावै का कहा जाय तौ तुम कौन दूकान लगैहौ?
- अगर तुम मेला मा हेराय जाव तौ का करिहौ ?

कबूतर

बहुतै सूध होंय कबूतर ,
घर मा पाले बहुत कबूतर
कुछ उज्जर कुछ लाल कबूतर
छम- छम ,छम -छम चलय कबूतर
कुछ नीले ,बैंगनी कबूतर
पहिरे हैं पैजनी कबूतर
चाहैं हमका बहुत कबूतर
बहुत दुलारे हमैं कबूतर
अंगूरी पै जब बैठ कबूतर
मुंह का चूम लेंय कबूतर
राखे रेसम बार कबूतर
रन झुन रन झुन चलय कबूतर
गुटुर गुटुर गूं बोलि कबूतर
मिसरी घोरय बोलि कबूतर

अभ्यास

- कबूतर केतने रंग के होत हैं ?
- कबूतर कैसे बोलत हैं ?
- कबूतर के बार कौनी मेर हैं ?
- कबूतर का पहिरे हैं ?

नाव चली

मेघा , चूजा ,मूस ,चूंटी औ गोबरौड़ा व्यवहारी रहे ,एक दिन चूजा कहिस “चलव हम सब जने घूमै चली औ दुनिया देखी .

चूंटी बोली “हाँ हाँ ,दुनिया बहुत बड़ी है ,हम सब जने नई नई चीज देखब .

सब जने चल परे .चलत चलत एक झील के किनारे अटे .अब हम पंचे आगे कैसे जाई ? गोबरौड़ा पूंछिस

मेघा बोला ,’’हम पयिर कै झील पार कै लेब’’

हम तौ तैरे नहीं जानित है ,हम का करी ?चूजा,मूस,चूंटी औ गोबरौड़ा कहिन

मेघा हँसय लाग .बोला ‘’टर्र ,टर्र,टर्र. तुमका तैरय नही आवत तौ तुम अपने अपने घरे लौट जाव ,यू कहिकै मेघा जोर जोर से हँसा औ पानी मा कूदि गवा .

बाकी चारव का या बात बहुत खराब लाग ,उई सब झील पार करय कै तरकीब सोंचय लाग .

आखिर मा एक उपाय सोंच लिहिन चारौ जने

मूस दौरि कै गवा औ अखरोट कै बोकला लै आवा ,चूजा एक पतवा उठाय लावा चूंटी एक सेंठा लै आई . गोबरौड़ा बड़ी देर के बाद आवा ,ऊ अपने साथे एक बड़ा कै तागा लै आवा चारव मिलि कै नाव बनावै लाग .उई सेंठा का अखरोट के बोकला माँ अरझाय दिहिन ,ऊमा तागा से पतवा पाल की तिना बाँध दिहिन ,थोरिन देर मा उनकी एक नाव बनि गै

चूंटी बोली “अब हम सब जने झील पार कर लेब .उइ सब आपन नाव पानी मा उतारिन औ ऊके उप्पर बैठिगे .मुसौना नाव चलावै लाग .धीरे धीरे उनकै नाव आगे की कैती जाय लाग ,सब जने का बहुत मजा आवा ..

चूहा –मूस **पत्ता** –पतवा

गुबरैला – गोबरौड़ा **चींटी** –चूंटी
देखेंगे –देखबै **सरकंडा** –सेंठा
पहुंचे – अटे **धागा** –तागा
फंसा दिया –अरझाय दिहिस
उतारा –उतारिन

अभ्यास

- सब व्यवहारी का सोंचिन ?
- मेघा का कहिस ?

- सब जने झील कैसे पार किहिन ?
- नाव बनावैं की खत्तिर मूस ,चूंटी,चूजा ,गोबरौड़ा कौन कौन चीज लैकै आयें ?
- इनके उलटे शब्द लिखौ --
- दूर .खराब ,आगे .हँसब ,आगे
- तुम पंचे कोनौ काम मिल जुल कै किहे हौ ?

चाँद

गर्मी की रात रही ,साबिर और सना अपने अम्मी औ अब्बू के साथ अटरिया पै बैठ रहे .आसमान मा चाँद देखाई परा .गोल गोल थरिया की तिना .साबिर बहुत खुस भवा
ऊ सना से कहिस ''देखव दीदी चाँद कैसे चमकत है !हुआं को रहत होई ?सना बोली "अबहीं तक चाँद पर जिये की खत्तिर जरूरी हवा ,पानी,खाना नहीं मिल पावा है ई मारे हुआं कोई नहीं रहत है
हुइ सकत है कब्बौ यू हुइ जाय "
साबिर अपनी अम्मी से कहिस "चाँद के बारे मा कुछ और बताऊ अम्मी "
अम्मी बोलीं "चाँद हमरी भुइयां के चौगिरदा चक्कर मारत है ,भुईयां से कुछ आदमी रॉकेट मा बैठि कै चाँद पर गये रहे , हुआं अंट कै उई खुसी से उलरे तौ खूब ऊंचे उलरि गे .चाँद पर बड़ी बड़ी चट्टान औ गढ़हा हैं .उई लोग हुआं से माटी औ पाथर कै नमूना भुईयां पै लै आये .
साबिर पूंछिस "चाँद पर एतनी चमक कहाँ से आवत है ?
अब्बू बताईन "चाँद का सुर्ज से उजेर मिलत है .हमरी भुईयां का सुर्ज से उजेर मिलत है .
साबिर पूंछिस "सुर्ज का को उजेर देत है ?"
सुर्ज एक तारा है .तारा कै आपन उजेर होत है .आसमान मा जऊन तारा टिमटिमाय रहे हैं उइ सब हमरे सुर्ज की तिना हैं ,ऊमा से कुछ तौ सुर्ज से बड़े हैं ,ई हमसे बहुत दूर हैं ई मारे छोट छोट देखाई परत हैं "अब्बू कहिन
अम्मी कहिन "अगले महिना ईद है तब तुमका चाँद की कहानी सुनायिब "

छत –अटरिया **बताईये** –बताऊ
थाली -थरिया **चारों ओर** –चौगि रदा

तरह –तिना **उछले** –उलरे
लिए –खत्तिर **गड्ढा** - गढ़हा
इसलिए –ई मारे **मिटटी** –माटी
पृथ्वी –भुईयां **पत्थर** –पाथर
सूरज –सुर्ज **उजाला** –उजेर
तरह –तिना **सुनाऊंगी** –सुनायिब

अभ्यास

- चंदा पै कोई काहे नही रहत है ?
- हमरी भुईयां औ चंदा मामा कया उजेर कहां से मिलत है ?
- रोज रात मा चंदा मामा का देखौ कया तुमका रोज चंदा एकै तिना देखात है ?
- अगर सूरज ना होत तौ का होत
- चंदा मामा कौनी रात का पूरे पूरे निकरत हैं ?

- चंदा मामा कौनी रात का बिलकुल नहीं देखात हैं ?

नंदू कै जुखाम

EB149W

बहुत जुखाम भवा नन्दू का
यक दिन ऊ यतना छींकिस
यतना छींकिस यतना छींकिस
सब पतवा गिरि गये पेड़ के
उइ समझिन आंधी कै झोंका

अभ्यास

- तुम पेड़ से पतवा गिरत कब देखेव है ?
- तुमका जुखाम होय पै का होत है ?
- आंधी आवै पै का होत है ?
- जुखाम होय पै का करै का चही औ का न करै का चही ?

जगतपुर गाँव के गेदहरा

यू जगतपुर गाँव आय .पहिले गाँव मा ठौर ठौर चहंटा औ गंदगी रहय .गेदहरा खेला चाहत रहें मुला कहाँ खेलती ?

कोई जगह नहीं रहय .इस्कूल जाय के रस्ता मा चहला औ पानी भरा रहय .एक दिन सब गेदहरा मैदान मा एकट्ठा भये .उई सब सोंचिन या गंदगी दूर हुई जाय तौ केतना नीक हुई जाय

लोकेश कहिस ,"हम परी से कहबै कि रात माँ आय कै जादू की छड़ी से हमरे गाँव का साफ़ औ सुंदर बनाय जाय "

यू सुनि कै सब गेदहरा हंसय लाग.

सरिता बोली "कहूँ परिव सफाई करती हैं ,हमहिन सबका कुछ करय का परी " सब मिलिकै पिलान बनायिन .

दुसरे दिन पछिलहरा सब गेदहरा गाँव मा प्रभात फेरी निकारिन ,

उनके हाथे मा तख्ती औ कुदार रहीं

सब नारा लगावत रहे

हमार गाँव कस होय

साफ़ सुथरा सुंदर होय

हरा भरा इस्कूल होय

घर घर माँ शौचालय होय

नाली नरदहा साफ़ राखव

गल्ली कोलिया साफ़ राखव

ईके बाद गेदहरा इस्कूल के रस्ता पर अटे ,उइ फरुहन से चहंटा हटावय लाग ,छोट छोट कुदार से नाली बनाय दिहिन .रुका भवा पानी नाली मा चला गवा .

तब तक गाँव के बहुत जने आय गये . गेदहरन के साथे उनहूँ सफाई मा जुटि गे .
सब खेल कै जगह साफ़ सुथरा कै दिहिन .गढ़हा मा माटी पाट दिहिन .
परधान दादा कहिन “तुम सब हमका रस्ता देखाय दिहेव ,हम सब मिल कै गाँव का साफ़ सुथरा बनायिब ,बिरवा लगायिब .अब तुम सब मन लगाय कै पढव ,खूब आगे बढ़व,यहै हमार आसिरवाद है .

यह-यू **बच्चे** –गेदहरा
सोंचा –सोंचिन **कीचड़** – चहंटा
अच्छा –नीक **योजना** –पिलान
सबेरे –पछिलहरा **कुदाल** –कुदार
कैसा –कस **स्कूल** –इस्कूल
नाली –नरदहा **रास्ता** –कोलिया
इसके –ईके **पंहुचे** –अटे
पेड़ –बिरवा **बनायेंगे** –बनाउब

अभ्यास

- जगत गाँव के गेदहरा काहे परेसान रहे ?
- गेदहरा गाँव की सफाई की खत्तिर का सोंचिन ?
- उई सब कौन नारा लगावत रहे

- अगर तुम्हार गाँव गंदा होय तौ तुम का करिहौ ?
- अपने स्कूल औ गाँव का साफ़ सुथरा करै की खत्तिर तुम का करिहौ

किसान की चतुराई

एक किसान आपन खेत जोतत रहा ,एक दम्मै से कहूं से एक भालू आय गवा .
भालू किसान का मारय की खत्तिर झपटा .किसान कहिस ,"तुम हमका काहे मारत हौ ? हमका मारव ना , फसल आवै देव जौन कहिहौ ऊ खवायिब ?
भालू कहिस ,"जमीन के उप्पर की फसल हमार औ नीचे की तुम्हार रही ,
किसान आलू बोय दिहिस .फसल आई तौ भालू का पतवा खाय का मिले औ किसान का बढ़िया आलू .भालू मुंह बनाय कै रहि गवा .
अगली बार भालू कहिस ,"देखौ भाई अबकी बार जमीन के नीचे की फसल हमार औ उप्पर की तुम्हार होई "
अबकी बार किसान गोंहू बोय दिहिस .जब फसल तैयार भय तौ किसान का चमकत चमकत गोंहू मिले .औ भलुअऊ का निस्ता जड़ मिलीं .अबकी फिर भालू मुंह बनाय कै रहि गवा .
अबकी बार भालू अपने मन मा किसान का मजा चखावै का सोंचिस .ऊ किसान से कहिस ,"जमीन के सबसे उप्पर कै औ सबसे नीचे कै फसल हमार होई ,"किसान मानि गवा .
ई बार किसान गन्ना बोय दिहिस .फसल आई तौ भालू आपन मूड़ पकर कै बैठ गवा . भलुअऊ का जरकुटा औ पतवा मिले औ किसान बढ़िया बड़े बड़े गन्ना लैके घरे गवा

अचानक –एक दम्मै **दिया** –दिहिस
कहीं से –कहूं से **पत्ता** –पतवा
आ गया –आय गवा **होगी** –होई
के लिए –के खत्तिर **गेंहू** –गोंहूँ

क्यों –काहे **केवल** –निस्ता

जो –जौन **सोंचा** –सोंचिस

खिलाऊंगा –खवायिब **कहा** –कहिस

ऊपर- उप्पर **सर** –मू ड़

अभ्यास

- किसान भालू से आपन जान कैसे बचायिस
- भालू काहे खिसियाय गवा
- तीसरी बार भालू कौन सर्त धरिस ?
- तुम किसान की जगह होतिव तौ का करतू?
- तीसर सर्त हारय के बाद भलुआ का किहिस होई ?
- अच्छा सोचव कि अबकी बार भलुआ कौन सर्त धरिस होई ?

हम को आन

हम आसमान मा छाये बदरन मा रहित है .हुआं से बरस कै भुईयां पर चले आइत है तुम कागज की नाव बनाय कै हमहिन् मा तैरावत हौ .

बताऊ हम को आन ?

हम सोंता से निकरित हन .तलवा औ झील मा एकट्ठा हुई जाईत है .नदिन मा बहित है , बहि कै समुद्र मा पंहुचित है . हुआं से भाप बनि कै उड़ जाइत है औ बादर बनि कै बरसित है .बताऊ हम को आन ?हम नल मा आयित है ,कुईयाँ से निकारे जाईत हन .बाँधन मा एकट्ठा कीन जाईत है .

बताऊ हम को आन ?

तुम हमहिन से हाँथ मुंह धोवत हौ ,नहात हौ ,कपड़ा धोवत हौ ,पियास लागत है तौ हमका पियत हौ ,हमहिन से खाना बनावत हौ .

सब हरहा –गोरू ,चिरई हमका पियत हैं .

किसान हमसे बिरवा औ फसल सींचत है ,हमहिन मा मछरी रहती हैं .

बताऊ हम को आन ?हमार जरूरत सबका परत है ,अगर हम साफ़ रही तौ तुम्हार सेहत ठीक रही .अगर कोई हमका गंदा करी तौ तुम बीमार परि जयिहौ ,ई मारे तुम हमका हमेशा साफ़ राखेव ,जेत्ता जरूरी होय ओत्ता प्रयोग किहेव ,तब्बै तुम सेहतमंद औ खुस रहिहौ

अब तौ तुम जान गये हुइहौ कि हम को आन ?

हमार नाम बताऊ तौ जानी ....

तुम्हरे घर मा .....???

बादल –बदरन **प्यास** –पियास

वहां -.हुआं **पीते हो** –पियत हौ
जमीन -भुईयां **जानवर** -हरहा –गोरू
बताओ –बताऊ **पेड़** –बिरवा
कुआं –कुइयां **मछली** –मछरी
किया –कीन **जितना** –जेत्ता
धोते हो –धोवत हौ **उतना** –ओत्ता

अभ्यास

- हमका पानी कहां से मिलत है ?
- चार ऐसे शब्द लिखौ जीमा बाद मा 'नी' आवत है
- पानी के बारे मा चार बात बताऊ ?
- पानी की बर्बादी कैसे रोकिहौ ?

- पानी पे कोनौ कविता सुनाऊ ?

कदुआ भाई कै बरात

जब कदुआ जी कै चली बरात

भई बतासन कै बरसात

बैंगन कै गाड़ी बनवाईन

वहि पै बैठे कदुआ राजा

शलजम औ पियाज मिलिकै

दूनौ खूब बजायिन बाजा

मेथी ,पालक ,भिन्डी ,तोरई

टिंडा ,मूरी .गाजर

बने बराती नाच देखावै

आलू ,मटर ,टमाटर

कदुआ भाई मुस्की मारय

लौकी दुल्हिन लायिन

कटहर और करैला भैया

चाट पकौड़ा खायिन

नींद खुली तौ समझ मा आवा

सपने मा घूमेन यह बारात

अभ्यास

- बरात आवै पै का का होत है
- बरात मा कौन बाजा बाजत हैं
- तुम कब्बौ कोनौ सपना देखेव है ,सपना मा का कया देखेव रहै
- तुम कब्बौ कोनौ बरात गये हौ
- बरात मा तुम का खाए रहेव ?
- कीके साथे नाचे रहेव ?
- बरात मा और का का किहे रहेव ?

गाँव

दिनेश चाचा औ उनके लड़का कृष्ण शहर से आवै वाले रहे ई मारे प्रकाश अपने दादा के साथे बस अड्डा पै खड़ा रहय .चाचा औ उनकै लड़का कृष्ण बीएस से उतरे , दूनो दौर कै दादा कै पैलगी किहिन .प्रकाश, चाचा कै पैलगी किहिस औ कृष्ण का गले लगाईस .

दादा कहिन,दिनेश तुम्हार फ़ोन आवा रहा हम कार लैके आये हन .सब कार मा बैठ कै गाँव कैती चल दिहिन. प्रकाश कृष्ण से पूंछिस “चाचा शहर मा का काम करत हैं “

कृष्ण बताइस “पिताजी हुआं कपड़ा के कारखाना मा काम करत हैं ,अच्छा तुम बताऊ, ताऊ जी हियाँ गाँव मा का काम करत हैं ?

हम लोग तौ खेती करित है ,पिता जी खेत मा साग सब्जी उगावत हैं”प्रकाश बताइस .

कृष्ण –का हियँव की सडक पक्की हैं ?

दादाजी –हाँ अब हियाँ खडंजा औ पक्की सडकें बनि गयी हैं .

सब जने बतलात बतलात घर अटि गे .

इत्ते मा भौं- भौं कै आवाज करत मोती आवा

.ऊ सबका सूंघिस ,फिर चुप्पे से आपन पूंछ हलावै लाग ,प्रकाश औ कृष्ण खूब बतलाने ,सब बैठ कै ताजा माठा पिहिन .

दुसरे दिन कृष्ण औ प्रकाश खेतन कैती घूमैगे .

कृष्ण देखिस कि बिजली के पम्प से खेतन की सिंचाई होत रही ,कुछ खाली खेतन मा टेक्टर से जोताई होत रही .

कृष्ण –ई पियर पियर सरसों के फूल केतने नीक लागत हैं !

प्रकाश –हाँ ,आजकाल खेतन मा गोंहूँ ,गन्ना,मटर ,चना औ अल्हरी बोई हैं .

कहूं कहूं गोभी लगायी गयी है .

एक कैती गन्ना की पेराई होत रही ,दूनौ मटर की फली खाईन औ गन्ना कै ताजा रस पिहिन .

संझा हुइ गै रही ,सबके साथे गैया –भैंसी घरे लौटय लाग रहीं .

कृष्ण औ प्रकाशव खेलत कूदत घरे लौटि आये

प्रणाम –पैलगी **पिया** –पि हिन

तरफ –कैती **यहाँ** –हियाँ

इतने में -इत्ते में **गेंहूं** -गोहूँ **क्या** -का **मट्ठा** -माठा **ट्रेक्टर** –टेक्टर **अरहर** –अल्हरी **पीले** –पियर **पहुँच गये** –अ टि गे

अच्छे –नीक **लगाया** –लगायिस

अभ्यास

- तुम्हरे गाँव की सड़क कस है ?
- कान्हा खेती कई कौन मशीन देखिस
- तुम खेत मा कौन फसल देखे हौ ?

- रोटी कौन अनाज से बनत है ?
- हरी सब्जिन कैनाम लिखौ ?
- खेत मा पानी काहे से सींचा जात है ?
- गुड़ कैसे बनावा जात है ?

हमरे सहयोगी

BBUW3X

किसान

दुइ बैलन कै जोड़ी लैकै

खेती करब है ऊकै काम

जाड़ा,गरमी,बरखा सहत है

कबव न करय ऊ आराम

डाकिया

मूड़े पै टोपी एक लगावै

काँधे पै थैला लटकावै

खाकी वर्दीमा मुसकावै

मनीआर्डर चिठ्ठीऊ लावै

कुम्हार

माटी कै ऊ चीज बनावय

सुंदर सुंदर ऊका सजावै

चाक घुमाय कै करत है काम

बोलव बच्चों उकय नाम

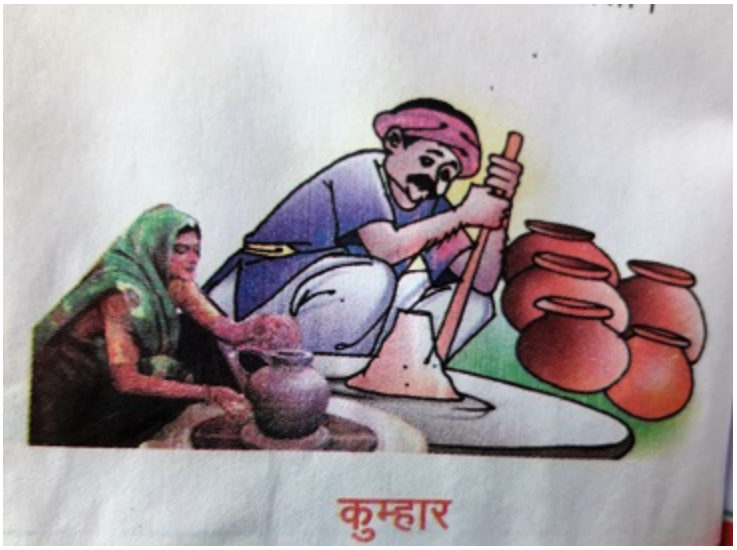

हलवाई

लड्डू ,पेड़ा,रसमलाई

दहिव ,जलेबी, बालूसाही

खोवा ,सक्कर ,दूध मिलाय कै

रोज बनावत खूब मिठाई

बढ़ई

कुर्सी,मेज ,तखत ,दरवाजा

तख्ती ,खटिया ,ढोल औ बाजा

काम करै फिर लेत है दाम

बच्चों बोलव ऊकै नाम

परी

जाड़े के दिन रहे ,आसमान मा एक परी उड़त रही . वा उड़त उड़त नीचे देखिस ,भुईयां मा रंग बिरंगे फूल खिले रहे ,परी फूलन के बिच्चा मा आयगै .हुआं उका एक तितुली मिली ,एक ममाखी छत्ता बनावत रही .परी ऊसे कहिस “ममाखी -ममाखी आऊ खेला जाय “
ममाखी बोली,”अबहीं हम छत्ता बनाय रहे हन ,हमरे लगे खेलय कै समय नहीं है ‘’
परी बोली,’’पहिले ख्यालव फिर छत्ता बनाय लिहेव “
ममाखी बोलिस ,”नाहीं नाहीं बच्ची ,जाड़े के दिन हैं ,बरफ गिरय वाली है ,वैते पहिले हमका आपन छत्ता बनाय लेक है .
परी हंसी औ कहिस ,”अगर तुम्हार छत्ता जल्दी बनवाय देई तौ का हमरे साथे खेलिहौ ?”
“हाँ ,बनवाय देव तौ बिलकुल खेलब “ममाखी कहिस
परी अपनी व्यवहारी ममाखिन का गोहार लगायिस .देखतै-देखत हुआ खूब ममाखी आय गयीं
हजारों हजार ममाखी ,उइ छत्ता बनाय कै सहद भरब सुरु कै दिहिन.
सब बहुत खुस हुइगे ,परी औ ममाखी खुसी से नाचय लागीं .
तितुलिव उनके साथे आय कै नाचय लाग .

थी -रही **देखा** -देखिस
बीच में -बिच्चा मा **वहां** -हुआँ
तितली -तितुली **उससे** -ऊसे
कहा -कहिस **मधुमक्खी** -ममाखी
खेलो -ख्यालव **लेना** -लिहेव
उससे -वैते **खेलोगी** -खेलिहौ
दोस्त -व्यवहारी **बुलाया** -गोहार

कहा -कहिस **भरना** -भरब

अभ्यास

- ममाखी कै मन परी के साथै खेलय कै काहे किहिस ?
- परी का कहिस ?
- ममाखी सहद कहां से एकठ्ठा किहिस ?
- जाड़े से बचे की खत्तिर तुम का करत हौ ?
- सहद खाय मा कस लागत है ?
- फूल कौन कौन रंग के होत हैं ?
- ममाखी कई कौन बात तुमका नीक लाग ?
- तितुली कै चित्र बनाऊ?
- तितुली पै कोनौ कविता सुनाऊ ?

सब हमहिन का समझावैं

कोऊ सुरुज से कहि न पावै
घाम हियाँ ना फैलाऊ
कोऊ चंदरमा से ना कहि पावै
अपन चांदनी दूर बहाऊ
कोऊ हवा से कहि ना पावै
घरि के भित्तर तुम ना आऊ
बादर से कोऊ कहि ना पावै
मुसराधार अब ना बरसाऊ
फिर काहे भैया हड़कावैं
भागव दूर हियाँ ना आऊ
अम्मा कहैं अपन खेलौना
घर मा तुम ना बिथराऊ
पापा कहैं की बहिरे खेलव
खबरदार भितरे ना आऊ
हमहिन पै सब रोब जमावें
हमरी गलती तनिक बताऊ

अभ्यास

- सूरज से कोई कुछ काहे नहीं कहत है ?

- अम्मा घर मा खेलौना बिथरावै से काहे मिन्हा करत हैं ?
- तुमका घर मा को को टोकत है
- तुमका घर मा कौन बात पे टोका जात है ?
- टोके जाय पे तुम का करत हौ ?

पुंछ हिलना भेड़हा

एक भेड़हा गड़हा मा गिरिगा .ऊ बहुत कोसिस किहिस मुला बाहर नहीं निकर पावा .
वैसी से एक भेड़ कै बच्चा आवत रहा ,भेड़हा ऊसे रिरियाय कै कहिस ,"व्यवहारी ,हमका ऊपर निकार लेव ,ज़्रान ,"
भेड़ कै बच्चा पूंछिस ,"अरे तुम को आव ,"हियाँ गड़हा मा कैसे फाट परेव हो ?"
भेड़हा बोला ,"हम एक कूकुर आन ,एक मुर्गा का बचावै के चक्कर मा हम खुद इमा फाट परे हन ,"
भेड़ कै बच्चा रहा तौ बहुत छोट, मुला बड़ा होसियार रहा .ऊकी महतारी ऊका खतरनाक जानवरन के बारे मा बहुत समझाइन रहै ,
ऊका भेड़हा की बात पै यकीन नहीं भवा .
भेड़ कै बच्चा बोला ,"मुला तुम तौ भेड़हा अस लागत हौ "
भेड़हौ कम चालाक नहीं रहा ,ऊ कहिस हमार पूँछ देखव ,कूकुर की तिना हालत है की नाहीं ?
यू कहिकै भेड़हा भेड़ के बच्चा का आपन पूँछ हलाय कै देखायिस ,फिर बोला ,"अब जल्दी से हमका बाहेर निकार लेव ,हम कूकुरै आन ."
भेंड़ कै बच्चा कहिस ,"मुला तुम्हार थूथुन तौ भेड़हा की तिना लागत है,हमका सोचय देव थोरी देर ."
भेड़हा का ई बात पै गुस्सा आय गवा .ऊ आपन थूथुन फैलाय कै भेंड़ के बच्चा का हड़काईस ,बेवकूफ !ईमा सोंचय की कौन बात है ?
ऊके बड़े बड़े नुक्कियार दांत देखि कै भेंड़ कै बच्चा अच्छी तिना जानि गवा कि यू भेड़हा आय .

ऊ कहिस ,"हौ तौ ज्वान तुम भेड़हा मुला धोखा देय की खत्तिर तुम पूँछव हलाय सकत हौ ,"

यू कहि कै भेंड़ कै बच्चा अपने घर की कैती भाग गवा .

भेंड़िया – भेड़हा **गड्ढा** –गड़हा

किया –किहिस **लेकिन** –मुला

निकल –निकर **पाया** –पावा

गिड़गिड़ाना –रिरियाय **दोस्त** –व्यवहारी

गिर पड़े –फाट परे **लेकिन** –मुला

की तरह –की तिना **कुत्ता** –कूकुर

मुंह –थूथुन **डांटा** –हड़काइस

नुकीला –नुक्कियार **इसमें** –ईमा

अभ्यास

- भेड़हा गड़हा मा कैसे गिर गवा
- मेमना भेड़हा का काहे नहीं निकारिस ?
- मेमना कैसे जानिस कि गड़हा मा भेड़हा है ?
- ई हरहन के बच्चन का कहत हैं -
- भेंड़,गैया ,कूकुर ,भैंस

दयालु सिद्धार्थ

एक दिन जब सिद्धार्थ बगीचा मा घूमत रहे तब्बय खून से लथपथ एक हंस उनके लगे गिरा ,ऊ बेचारा तीर से घायल हुइ गवा रहा ,सिद्धार्थ सावधानी से ऊ तीर निकारिन औ घाव साफ़ किहिन ,थोरी देर बाद सिद्धार्थ कै चचेरा भाई देवदत्त आवा औ कहिस ,यू हंस हमार आय ,ईका हम तीर मारा है ,हमका देव ईका

सिद्धार्थ कहिन यू हंस केतना नीक लागत है फिर तुम ईका मारा काहे चाहत हौ ?

देवदत्त कहिस ,"ईका हम तीर मारा है ,यू हमार सिकार आय "

मुला सिद्धार्थ ऊ घायल हंस देवदत्त का नहीं दिहिन ,झगड़ा राजा के दरबार मा पहुंचा ,देवदत्त कहिस ,"ईका हम तीर मार कै गिराए हन ,यू हमार आय "सिद्धार्थ कहिन ,"महराज ,ई हंस कै जान हम बचाएन है ई मारे ईका हमरे लगे रहै का चही"

राजा कहिन,"सिद्धार्थ तुम ठीक कहत हौ,तुम ई चिरई कै जान बचायेव है ,ई मारे ई पै तुम्हार हक जादा है ,तुम ई हंस कै सेवा करौ "

महराज ! हम यहिके देहीं से तीर न निकारित तौ या चिरई कब का मरि जात ,अब यू फैसला आपै करौ कि चिरई कीका मिलै का चाही जे ईका तीर मारिस कि जे ईकै जान बचायिस !

तुम ठीक कहत हौ,जे चिरई कै जान बचाइस ,वहिकै हक्क जादा है .देवदत्त ई चिरई देव दत्त का मिलै का चही

अभ्यास

- अगर तुम राजा होतिव तौ चिरई कीका देतिव ?
- ई कहानी से तुमका का सीख मिलत है ?
- हमका जानवर औ चिरई की मदद करै का चही कि नाहीं ?
- हमका जानवर –चिरई के उप्पर दया देखावै का चाही कि नाहीं ?

- तुम कब्बव कोनव जानवर औ चिरई कै जिव बचायेव है ?कब?कैसे? सोंचव ,बताऊ

राष्ट्रीय चिन्ह

हर देस कै आपन पहिचान होत है .या पहिचान कुछ निसानन से कीन जात है . ई निसान राष्ट्रीय प्रतीक कहे जात हैं ,,आऊ इनके बारे मा जाना जाय

राष्ट्रीय जानवर –बाघ

राष्ट्रीय चिरई –मुरैला

राष्ट्रीय चिन्ह –अशोक की लाट

राष्ट्रीय फूल –कमल

राष्ट्रगान-

जन- गण -मन अधिनायक ,जय हे
भारत –भाग्य विधाता
पंजाब –सिंध –गुजरात –मराठा –
द्राविण-उत्कल बंग
विंध्य-हिमाचल –यमुना –गंगा
उच्छल –जलधि तरंग
तव शुभ नामे जागे ,
तव शुभ आशिष मांगे ,
गाहे तव जय गाथा
जन –गण-मंगल दायक जय हे
भारत –भाग्य विधाता
जय हे ,जय हे ,जय हे ,
जय जय जय जय हे

अभ्यास

- अपने राष्ट्रीय झंडा का का कहत हैं ?
- हमार राष्ट्रीय गान को लिखिस ?
- तुम्हरे विद्यालय मा राष्ट्रीय झंडा कब फहरावा जात है ?
- राष्ट्रीय झंडा मा सबसे उप्पर कै पट्टी कौने रंग कै होत है ?
- बीच कै पट्टी कौने .रंग कै होत है ?
- सबसे नीचे .कौने रंग कै पट्टी है ?
- हमार राष्ट्रीय चिरई को आय ?
- हमार राष्ट्रीय जानवर को आय ?
- हमार राष्ट्रीय फूल का आय ?

- **जानव औ लिखव**

- राष्ट्रीय झंडा कब फहरावा जात है ?
- राष्ट्रगान केतने समय मा गावत हौ ?
- आपन राज चिन्ह कहाँ से लीन गवा है ?
- राष्ट्रीय झंडा मा चक्र मा केतनी तीली होत हैं ?
- राष्ट्रीय झंडा मा केसरिया रंग का बतावत है ?
- राष्ट्रीय झंडा मा सफ़ेद रंग का बतावत है ?
- राष्ट्रीय झंडा मा हरा रंग का बतावत है ?

- **अपनी कापी पै राष्ट्रीय झंडा कै चित्र बनाऊ औ रंगव ?**

बुझव्वल

-

- करिया गाय करिंगा बाछा ,तड़पी गाय भागिगा बाछा –**बंदूक और गोली**
- एक पेड़ ऐसन भवा ,आधा बगुला आधा सुआ –**मूरी**
- सावन फूल चैत मा बतिया ,तुम बूझौ महतारी बिटिया –**बबूल**
- एक पेड़ सररौआ ,जीपै चील न बैठे कौआ –**धुआं**
- गिरा बद्द से ,उठायिन पांच जने , खाइन बत्तिस जने ,स्वाद पाईन एक जने –**आम ,पांच ऊँगली ,बत्तिस दांत .एक जीभ**
- अंजुरी भर लावा ,घर भरे मा छितरावा –**तारे**
- लाल गाय खर खाय ,पानी पिए मर जाय –**आग**
- दुइ मुंह छोट एक मुंह बड़ा ,आधा मनई लीले खड़ा –**पाजामा ,पैंट**
- राजा कै बिटिया बारह मा पढ़े ,बारह पास एक मा पढ़े –**घड़ी**
- अंगुरी भर के बाले मियाँ ,बित्ता भर कै पूंछ –**सुई धागा**

तुमका कोनव पहेली आवत है , अच्छा बुझाऊ तनी

संरक्षण: श्री संजय सिन्हा, निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ0प्र0 ,लखनऊ।

अवधारणा एवं निर्देशन: डॉ.अजय कुमार सिंह, संयुक्त शिक्षा निदेशक (एस0एस0ए0), राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ0प्र0 लखनऊ।

समन्वय व समीक्षा:

- श्रीमती दीपा तिवारी, सहायक शिक्षा निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ0प्र0 लखनऊ।
- डा0 प्रदीप जायसवाल, प्रवक्ता (शोध), राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ0प्र0 लखनऊ।
- डा0 वन्दना मिश्रा, प्रोग्राम स्टेट प्रोग्राम मैनेजर, केयर इण्डिया, उ0प्र0 लखनऊ।
- श्री मृणाल मिश्रा, सलाहकार केयर इण्डिया, उ0प्र0 लखनऊ।
- **ई-बुक डिजाईन:** श्री आशुतोष आनन्द पूर्व माध्यमिक विद्यालय मियागंज बाराबंकी।

लेखन:

- श्री राम बहादुर मिश्र पूर्व माध्यमिक विद्यालय नरौली, बाराबंकी।
- श्री आशुतोष आनन्द पूर्व माध्यमिक विद्यालय मियागंज बाराबंकी

आडियो- श्रीमती अंजना अवस्थी, ग्राम- रायपुर बाराबंकी।

कवर पेज-: श्री गणेश चन्द्र डे - स्वतंत्र चित्रकार उ0प्र0 लखनऊ।

चित्रांकन एवं डिजाईन:सुश्री प्रतीक्षा चैहान, सलाहकार राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ0प्र0 लखनऊ।

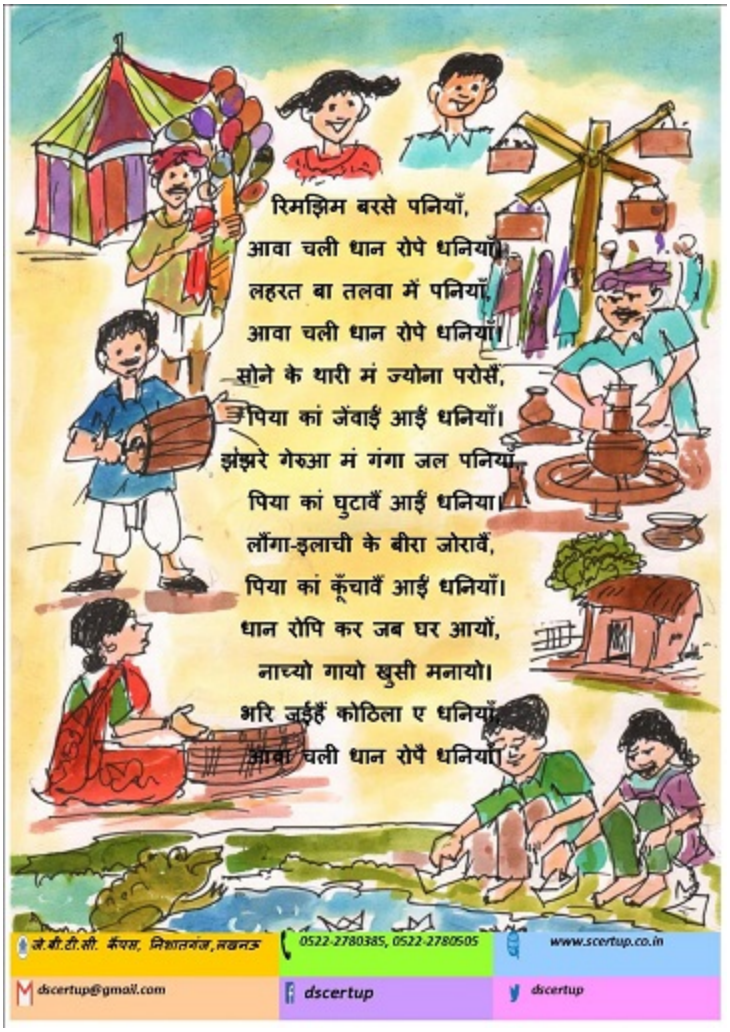

जे.बी.टी.सी. कैंपस, निशातगंज, लखनऊ
0522-2780385, 0522-2780505
www.scertup.co.in
dscertup@gmail.com
dscertup
dscertup